श्रीकृष्ण और गोपियाँ तब यमुना के तट पर गयी, जहां नदी ने रास के लिए एक सुंदर मंच स्थापित किया था। गोपियों ने श्रीकृष्ण से बात करना शुरू कर दिया। वे नाराजगी जताना चाहती थी कि श्रीकृष्ण ने उन्हें बीच में ही बिना कारण के छोड़ दिया था। गोपियाँ चाहती थी कि श्रीकृष्ण बिना किसी कारण के उन्हे छोड़ने की गलती स्वीकार करें।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 94232 09132

इस बात को ध्यान में रखते हुए उन्होंने श्रीकृष्ण से पूछा, 'कुछ लोग केवल उन लोगों से प्यार करते हैं जो उन्हें प्यार करते हैं, जबकि कुछ लोग उन लोगों से भी प्यार करते हैं जो उन्हें प्यार नहीं करते हैं। लेकिन अभी भी उन लोगों की एक और वर्ग है जो इन दोनों प्रकार के लोगों से प्यार नहीं करते हैं। ओ! प्यारे प्रियतम, आपको सबसे ज्यादा क्या पसंद है? ' अब इसके अलावा किसी वर्ग के लोग संसार में हो ही नही सकते और श्रीकृष्ण इसमें से कुछ भी चुनते है तो ये सिद्ध हो जाता है श्रीकृष्ण को अपने प्राण से भी अधिक प्यार करनेवाली गोपियों को आमंत्रित करने के बाद रास के बीच में ही उनको छोड कर इस प्रकार दुःखी करके नही जाना चाहिए था।

श्रीकृष्ण गोपियों का मतलब समझ गये। उन्होंने जवाब दिया,"जो केवल अपने से प्यार करने वाले से ही प्यार करते हैं, वे अपने स्वार्थी उद्देश्यों के लिए सबकुछ कर रहे हैं। वे न तो अच्छे दिल हैं और न ही वे धार्मिक हैं। उनका प्यार केवल अपने सुख के लिए ही होता है। स्वार्थ के अलावा उनके पास कोई अन्य उद्देश्य नहीं है। ओ!! सुंदरीयों! वे लोग जो अपने से प्यार न करने वाले से भी प्यार करते हैं वे परोपकारी होते है। उदाहरण के लिए दयालु लोग, सौम्य स्वभाव वाले लोग, पिता और मां। उनका दिल दयालुता से भरा होता है। दूसरों की मदद करने की उनकी इच्छा होती है। वास्तव में बोलते हुए, उनके कार्य दोष रहित, सत्य से भरे हुए और पवित्र होते हैं।

ऐसे कुछ लोग हैं जो अपने से प्यार करने वाले से भी प्यार नही करते तो जो उनसे प्यार न करने वालों से प्यार करने का कोई प्रश्न ही नही हैं। मतलब इस प्रकार के लोग किसी से भी प्यार नही करते।"

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 94232 09132

श्रीकृष्ण ने जारी रखा "ये चार तरह के लोग हैं। सबसे पहले वे लोग हैं जो दिव्य आत्म समाधी में लीन रहते हैं। उनकी इंद्रियाँ संसार का विषय ग्रहण नही कर सकती। वे कुछ और देखते ही नहीं। दूसरे वे लोग हैं जो दूसरों को देखते तो हैं लेकिन अनन्त आनंद का अपना लक्ष्य हासिल कर चुके हैं और इसलिए उन्हें दूसरों में कोई रूचि नहीं है। तीसरे वे हैं जो जानते नहीं कि कोई उन्हें प्यार करता है या नहीं। चौथे लोग गुरूद्रोही एवं गद्दार हैं जो एहसान फरामोश होकर अपने पर उपकार करने वाले लोगों को भूल जाते है या अपने पर उपकार करने वाले लोगों की हानी करते हैं।"